उभयाचार
स्कंद शुक्ल

"माँ के पेट में हम-तुम शुरुआत के दो महीने हिंजड़े रहे, जुगल। हर्माफ्रोडाइट।" इला कैलेण्डर में बने जानवरों की ओर इशारा करते हुए कहती है।" शुरुआत में तो गुप्तांग ही नहीं थे हमारे पास, न नर के और न मादा के। और फिर जो बने तो ऐसे बने कि कुछ-कुछ दोनों के जैसे।"

"पर बच्चे का लिंग-निर्धारण तो उसके बहुत पहले हो जाता है न? वह क्या कहते हैं जब, एग और स्पर्म आपस में...?" जुगल दोनों हाथों की उँगलियाँ चिड़ियों की चोंचों-सी आपस में मिलाता है।

"फ़र्टिलाइज़ेशन! अण्डाणु का लाखों शुक्राणुओं में से किसी एक के साथ मिलना! एक सम्भोग जो बाहर शैया पर होता है न, उसके कुछ देर बाद होने वाला दूसरा सूक्ष्म सम्भोग! बल्कि ऑर्गी! एक गोलाकार मोटी आरामपसन्द औरत की तरफ़ दौड़ते लाखों नन्हें कृमिकाय पुरुष! कीड़े कहीं के! यू मेन आर सच इंसेक्ट्स! वैसा ही बाहर-सा बिस्तर ... वैसा ही उस बिस्तर को लपेटे अँधेरा! बस ... पेनीट्रेशन! और नयी ज़िन्दगी की शुरुआत!' कहते हुए शरारती इला की आँखों में किसी माँ-सी चमक आ जाती है।

जुगल जवाब नहीं देता। उसके पास संसार के सामान्य कहे जाने वाले उन पुरुषों-सा वह कृमिभाव नहीं है, जिसकी अभी-अभी इला ने खिल्ली-सी उड़ाई है। इसलिए उसकी नज़रें वापस वाइल्डलाइफ़-कैलेण्डर के उसी चित्र पर जम जाती हैं जो उसे दिखाने के बावजूद बात वह मानव-भ्रूण-विकास की करने लगी थी।

इला की यह पुरानी आदत है जिससे जुगल भलीभाँति परिचित है। वह विषय तक उँगली पकड़ कर ले जाती है और फिर जानबूझ विषयान्तर कर देती है, गोया किसी गाइड ने किसी टूरिस्ट को जंगल में ले जाकर करके अकेला छोड़ दिया हो ताकि वह वन्य-जीवन का प्राकृतिक 'आनन्द' विशुद्ध रूप में ले सके।

चित्र में दो नर जिराफ़ अपनी लम्बी गर्दनों को टकराते आलिंगनरत हैं। उनमें से एक भी मादा नहीं है, यह बात इला ने जुगल को नहीं बतायी है, फ़ोटो के कैप्शन ने ज़ाहिर की है। थोड़ी दूरी पर शेरों का एक सहवासरत जोड़ा है, जिसमें काले अयाल वाला नर मादा के ऊपर सवार है। नीचे इंगित है: नेचर-ऑल एफर्ट्स आर नॉट मेंट टु प्रोक्रीएट (प्रकृति: सारे प्रयास प्रजनन के लिए ही नहीं होते।)

सामने खिड़की से अन्दर आती शाम की धूप के पीले पट्टे फ़ोटो-एलबम और उन दोनों के चेहरों पर पड़ रहे हैं, मानो जिराफ़ की गर्दनें उसमें से बाहर निकलकर कमरे से बाहर झाँकना चाह रही हैं। जुगल उसे बन्द कर देता है, अपने गंजे सिर हाथ फेरता है और पूछता है, "चाय पियेगी इलू?"

इला वाइल्डलाइफ़-फ़ोटोग्राफ़र है। हर क़िस्म की आदिम जिन्दगी से जुड़ना और उसके बीच में समय बिताना उसका शौक नहीं बल्कि पैशन बन चुका है। वह बिना एक पल भी सोचे जुगल को जवाब देती है, "बना डाल मेरी जान! चीनी एकदम कम रखियो।"

इला-जैसी लड़कियों को जुगल 'जंगली' बुलाता है, जुगल-जैसे लड़कों को इला 'गंजला' कहकर सम्बोधित करती है। 'जंगली' का शाब्दिक अर्थ तो सर्वज्ञात है, 'गंजला' में उसी के दो पहले अक्षरों को जुगल की सफाचट खोपड़ी को देखते हुए शरारती ढंग से उलट दिया गया है। इला का मन बचपन से ही जीवविज्ञान में रमता रहा, उम्र के आगे बढ़ने पर उसने विज्ञान को कैमरा बनाकर अपने कैरीपैक में डाला और जीव की तरफ बढ़ गयी। आगे बी.एससी. की भी

पढ़ाई की, लेकिन आँखों को कैमरे के संग जंगल-जंगल घूमने का ऐसा चस्का लग चुका था कि उसी को उसने अपना व्यवसाय बनाने की ठान ली। एक टीवी चैनेल द्वारा आयोजित फ़ोटो-प्रतियोगिता में ज़ू में कूदते एक गैंडे की फ़ोटो भेजी और पुरस्कृत हुई। फिर उसी क्षेत्र में लोगों से जान-पहचान बढ़ी और अन्ततः उसी चैनेल में नौकरी मिल गयी, जिसके माध्यम से अब वह भारत और विदेश में प्राणि-जीवन के चित्र उतारती और फ़िल्में शूट करती घूमा करती है।

"सम्भोग एक वहशियाना हरक़त है! डोंट यू थिंक सो? टेल मी ऑनेस्टली!" उसने एक बार अपने बॉयफ्रेंड की पार्टी में एक घुटी चाँद वाले लड़के को बोलते सुना था। उसके इस वाक्य ने उसके मन में इस तथ्य को कहने वाले से मिलने और बात करने का एक कुतूहल पैदा किया, जिसकी अन्तिम परिणति उसके प्रेमी से विलगाव में हुई।

"हियर इज़ योर कॉफ़ी जंगली!" जुगल उसकी ओर मग बढ़ाते हुए कहता है।" क्या सोच रही है, मैं जानता हूँ।"

"थैंक्स गंजले।" वह पल भर को खामोश होती है और फिर अपनी बात खोलती है। "बता।"

"तू यही सोच रही है न कि उस दिन निलय की पार्टी में मैं वह सेंटेंस कैसे बोल गया। यह ठीक है कि मैंने थोड़ी पी रखी थी, लेकिन जो मैंने वहाँ कहा, वह इसलिए कि मैं ..."

"अबे चल यार! इत्ती जजमेंटल ना थी मैं पहली मुलाक़ात में! बस यह लगा कि कौन टकला है, जो लवमेकिंग में वायलेंस तलाश लेता है।" वह पहला सिप लेते हुए कहती है।" और निलय से इशूज़ बहुत से थे। इट वॉज़ कॉम्प्लिकेटेड सिंस इट बिगैन। शुरुआत से ही हम उलझे हुए थे और सुलझे तभी जब एकदम अलग-अलग हो गये फाइनली।"

"पर तुझे डिसअपॉइंटमेंट नहीं हुआ ज़रा भी ... यह जानकर कि मैं ... गे हूँ? जिस स्पार्क से, जिस चमक से खिंच कर तू मेरे पास आयी थी ... उसमें

सडेनली ऐसा ऐंगिल आ जाएगा ... ऐसा हम नहीं सोचते यार! हम या तो नर होते हैं या मादा होते हैं या फिर हिंजड़े ... नपुंसक होते हैं। और कोई कैटेगरी नहीं होती हमारी। यह सदियों से चला आ रहा क्लासिफ़िकेशन है हमारा, और इसके अलावा जो कुछ भी है वह महज एक बीमारी है और कुछ नहीं!" कहते-कहते जुगल के स्वर में एक तल्ख़ी आने लगती है।

"सेक्स को लाल या बैंगनी-भर समझता है हमारा समाज, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। वह नहीं जानता कि यौनेच्छा एक सतत फैला स्पेक्ट्रम है रंगों का, जिसमें इतना सरल वर्गीकरण नहीं होता। नर को कई स्तरों पर नर होना पड़ता है और मादा को कई स्तरों पर मादा--- तब वह वैसे दीखते हैं जैसा हमारा समाज उन्हें देखना चाहता है।"

"तू 'एक्सएक्स' है इसलिए औरत है मगर मैं 'एक्सवाई' होकर भी इन-सा नहीं हूँ ..."

"जेनेटिक पहचान पासपोर्ट पर पहला ठप्पा है गंजले, बात उसके आगे भी है। जींस हुआ करें नर वाले या मादा वाले, लेकिन नर हॉर्मोन या मादा हॉर्मोन न निकले तो? या फिर हॉर्मोन निकले लेकिन बाहरी अंगों का विकास आम आदमी या आम औरत-सा न हुआ तो? इट इज़ कॉम्प्लेक्स, ट्रस्ट मी। और सेक्शुअल प्रेफेरेंस न हमारे चाहने-भर से तय होती है और न हम उसे सायास बदल सकते हैं। वह फ्लूइडिक है, आज कोई विषमलिंगी कल गे हो सकता है ..."

"तो तू मेरे स्ट्रेट होने का वेट कर रही है?" जुगल चुहुलबाज़ी करता है।

"नहीं रे! न! मुझे तेरे स्ट्रेट होने से बल्कि डर लगता है, कहीं तो भी निलय और मेरे पहले वाले बॉयफ्रेंड्स सा निकला तो ... शायद तू इन-सा होता तो हम अब तक चुक चुके होते--- एक आग जो भड़कती और अपने आगोश में बहुत कुछ लीलकर कर ठण्डी पड़ जाती।"

आँखों में छलकती एक नम झिलमिल के साथ जुगल इला को गले से लगा लेता है। अन्दर कॉफ़ी समाप्त हो चुकी है और बाहर दिन। आज अप्रैल का अन्तिम शनिवार है और हवा में ठीक-ठाक गर्मी हो गयी है, इसलिए दोनों बाहर वॉक पर निकल जाते हैं।

लखनऊ की गोमतीनगर कॉलोनी के अपने अपार्टमेंट से नदी-तट तक वे दोनों पैदल चल रहे हैं । रास्ते में इला हर चीज़ का मज़ाकिया लहज़े में लिंग-निर्धारण करती चलती है- "देख बस जाती है, लेकिन स्कूटर जाता है। लाइट जलती है, लेकिन खम्भा खड़ा है। धारा बहती है, लेकिन फव्वारा फूटता है।"

धारा! फव्वारा!

वे दोनों वहीं नदी के किनारे आकर उस फव्वारे पर ठहर जाते हैं। बैराज के समीप उठती पानी की फुहारें क्षण-क्षण अपने रंग बदल रही हैं --- लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला। जुगल का ध्यान अभी भी इला की कही बात पर है। वे उम्मीद लिये ऊपर को उठती हैं, स्याह हुए जाते आकाश को अँधेरे से बचाने के लिए मगर फिर वापस नीचे को गिर पड़ती हैं। लेकिन वे फिर भी आशान्वित हैं कि एक दिन जब सूरज डूबेगा, तो वह आसमान को अँधेरे के आग़ोश में छोड़कर इस तरह नहीं जाएगा ; वह अपने रंगों की तिजोरी रख जाएगा वहाँ ताकि वह उसी तरह खुला-निखरा-सुथरा बना रहे अगली सुबह तक। और फिर चाँद? उसका क्या होगा? चाँदनी रातों का क्या होगा? उनपर सदियों से बनी-बनती शायरी का क्या होगा? लेकिन ठीक भी है। सदियों से चाँद चमकता आया है, मगर रातें अँधेरी बनी रही हैं। तो अगर रातों में उजाला नहीं है, तो चाँद की ज़रूरत आख़िर क्या है? खाली शो-बाज़ी? या फिर शायरों के लिए कन्वीनिएंट थॉट-प्रॉसेस मुहैया कराना? या फिर केवल इतना उजाला देना जितने से रात में हाथ-को-हाथ सूझ सके? ठीक ही तो है कि नाइटबल्ब है चन्द्रमा कुदरत का जिसमें नींद ली जाए और उन कामों को किया जाए जिन्हें उजाले में नहीं किया जा सकता।

जुगल को नीदरलैंड्स में गुज़रे अपने बचपन के वे दिन याद आते हैं। हरे-भरे घास के मैदानों पर घूमती नज़र आती दर्जनों पवनचक्कियाँ, बागानों में खिले हज़ारों-हज़ार लाल-पीले ट्यूलिप के फूल, पतले-पतली नहरों के किनारे बैठकर साइकिल से आते-जाते हर उम्र के लोगों को देखना --- पहले पाँच सालों की वे रंगबिरंगी यादें जो अब जीवन की फ़ीचरफ़िल्म की शुरुआती यादगार रीलें बनकर क़ैद हैं। फिर माँ-बाप का तलाक़ हुआ और उसके डच पिता को छोड़कर उसकी माँ भारत वापस आ गयी। जोधपुर में जहाँ की वह रहने वाली थीं, वहीं जुगल की स्कूली पढ़ाई हुई। फिर उसने इंजीनियरिंग की तैयारी की और रुड़की में उसका दाख़िला हो गया। बी.टेक. पूरा करने के बाद, दिल्ली से एम.बी.ए. और फिर यहाँ लखनऊ में अपने दोस्तों के साथ एक डेयरी प्लांट के शुरुआत। यही उसका अब तक के बत्तीस सालों का ज़िन्दगीनामा रहा है।

"हम हर चीज़ का सेक्सीफिकेशन क्यों कर देते हैं इला? यहाँ तक कि भगवान् का भी?"

मनुष्य हर चीज़ अपने सापेक्ष देखता है गंजले। उसके सारी क्रियाएँ या तो नर हैं या मादा। दुनिया बँटी हुई है इन दोनों खाँचों में, जिन्हें एक ऐसी लकीर से बाँटा गया है जो एकदम स्पष्ट और डिस्टिंक्ट है। नो कंफ्यूज़न। धरती के पासपोर्ट पर आप या तो मेल हैं या फिर फ़ीमेल। और अगर आप इनमें से कुछ भी नहीं है, तो आप धरती के लगभग नागरिक नहीं हैं, आप यहाँ शरणार्थी हैं।"

"स्वर्ग के असाइलम सीकर्स!" जुगल खिलखिला उठता है।

" इंसान की यौन-पसन्द केवल जीन्स पर निर्भर नहीं करती गंजले । मामला केवल एक्सएक्स और एक्सवाई तक ही का नहीं है। आगे लम्बा सफ़र होता है। हर भ्रूण मादा ही बन कर निकले नौ महीनों बाद अगर उसे रोका न जाए यह कहकर, कि 'एक्सक्यूज़ मी भाई साहब! जी आप! जी हाँ, आप वाई के साथ

पैदा हुए हैं इसलिए भाई साहब ही हैं, ग़लत लाइन में मत जाइए। उधर चलिए, पेंडुलम वाली लाइन में! डिंगडॉन्ग!"

"इशारा कहीं जाने का हुआ था, हम गये भी, पहुँचे भी। सब कुछ ठीक निपटा। नौ महीने बिता कर बाहर भी आये। फिर न जाने हमें क्या हुआ?" जुगल के चेहरे पर एक निगूढ़ मुस्कान है।

"कुदरत मेरी जान! ये जो कुदरत है न, इसमें इतने राज़ हैं कि इंसान अभी भी बूझ नहीं सका है। केवल जीन्स हमें नर-मादा नहीं बनाते, केवल हॉर्मोन हमें नर-मादा नहीं बनाते, केवल बाहरी काया हमें नर-मादा नहीं बनाती। लैंगिक पहचान के कई-कई पहलू हैं बाहरी-भीतरी और कई अज्ञात।"

सामने कई युगल हाथों में हाथ डाले अम्बेडकर-स्मारक के पास वाली सड़क पर घूम रहे हैं। प्राकृतिक सौर-मर्यादा अब डूब चुकी है और कृत्रिम रोशनी के लट्टू जहाँ-तहाँ जगमगा रहे हैं, जिनसे मुँह चुराकर चुम्बनों के आदान-प्रदान में उन्हें कोई दिक़्क़त नहीं होती। वे झूम रहे हैं, थिरक रहे हैं, खिलखिला रहे हैं और एक दूसरे पर टूटे पड़े हैं। पुलिस की वैन कुछ दूर पर खड़ी है, 1090 का लाल ग्लोसाइन बोर्ड चमक रहा है।

"मर्यादाओं की चौहद्दी लचीली होते देख अच्छा लगता है, है न जंगली?" जुगल कहता है।

"मर्यादा का निर्माण पूरी जानकारी के बाद हो, तो बेहतर है गंजले। अज्ञान जिस मर्यादा को गढ़ेगा और पोसेगा वह एक दिन अराजकता बनकर समाज पर टूटेगी।"

"मर्यादा तो नतीजों को देखकर तय होती है। जो काम बुरे नतीजे दे, वह बुरा। जो ठीक-ठाक दे, वह ठीक। जो अच्छे दे, वह अच्छा।"

"वेरी यूटिलिटेरियन! एक बात बता, हर काम नतीजा देता ही है क्या? जो काम नतीजा न दे, वह बुरा कैसे?"

जुगल अपना बायाँ गठीला-मांसल भुजदण्ड इला के गले के ऊपर हार-सा डाल देता है। "सोच अगर अब इसी तरह बिन नतीजे वाले लोग सभी होते... हमारे मम्मी-डैडी भी ऐसा ही सोचते तो हम दुनिया में कैसे आते? बता?"

"एग्ज़ैक्टली! यू नेल्ड इट बेबी! आपकी लैंगिक पहचान आपके सोचने से नहीं तय होती, जैसा कि आम लोग सोचते हैं। वह कुछ आप लेकर पैदा होते हैं मगर बहुत कुछ पर्यावरण बनाता है। बच्चा यह सोचकर जवान नहीं होता कि उसे लड़का बनना है या लड़की। वह सोच ही नहीं सकता। हमारे या किसी के भी माँ-बाप सोचकर माँ-बाप नहीं बने, ऐसा करना उनके बस में ही नहीं था।"

"सोसाइटी करे भी तो क्या? वह पैदाइश के समय बच्चे का सेक्स एक इंच-भर के स्ट्रक्चर से करती है। उसे न भीतर के केमिकल्स का पता है और न जेनेटिक्स का। और फिर यह लल्ला-लल्ली की फ्रॉक या पैंट्स में से एक की खरीद में जुट जाती है, गुड़िया या गन में एक का आसान चुनाव कर लेती है।"

"ये जो लोग पेयर बनाकर यहाँ घूमते दिख रहे हैं, ये सब इंसानी नर-मादा हैं मेरे दोस्त। उन्हें ऐसा होना भी चाहिए समाज के हिसाब से। हर युगल एक प्रजनन की सम्भावना है, अगर सम्भावना नहीं है तो वह युगल ही नहीं है ..."

"भाई-बहन या और रिश्ते भी तो संग घूम सकते हैं।"

"नहीं, सम्भावना के बग़ैर नहीं। समाज उसमें भी सम्भावना तलाशेगा।"

"और जहाँ प्रजनन की सम्भावना ही न हो? सामाजिक बन्धन के कारण नहीं, बल्कि दैहिक संरचना ही उसे न चाहती हो तो ..."

"भारत को नीदरलैण्ड्स बनाना चाहते हो? हमारी ट्रेन उनसे बहुत लेट चलती है गंजले। आज से चार सौ साल पहले जब वे माइक्रोस्कोप-टेलिस्कोप बना कर दूरियाँ और नज़दीकियाँ नाप रहे थे, तो हमारे यहाँ भक्तिकाल-रीतिकाल चल रहा था।"

उनकी यह चर्चा अभी और चलती और नये-नये गुह्य आयाम छूती, अगर दूर सड़क के कोने पर जमा होती भीड़ इला का ध्यान नहीं खींचती। फ़ुलस्टॉपों-से सिरों का आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ता जाता जमावड़ा और धीमे-धीमे कानों में पड़ता असहज कोलाहल -- न जाने वहाँ क्या हो रहा?

"हे! वहाँ कुछ है! लुक! चलें? चलकर देखें?"

जुगल को इला का स्वभाव अच्छी तरह मालूम है। वह कोलाहल सुनकर सतर्क तो होती रही है लेकिन उससे उसे डर नहीं लगता। वह जानवरों के बीच समय गुज़रती है, पत्तियों चाहे पेड़ पर हरी-भरी लहलहा रही हों अथवा नीचे सूखी चरचरा, वह सबमें संगीत तलाश लेती है। लकड़बग्घे की भयानक आवाज़ हो अथवा साँप की फुफकार उसके कैमरों में क़ैद सबके किस्सों को वह अनगिनत बार सुन चुका है। इसलिए उसने उस एडवेंचर-बाला के सुर-में-सुर मिलाया और हलके से कूदकर खड़े होते अंदाज़ में कहा ---"चलो।"

सहानुभूति प्रदर्शित करनेवालों की जमघट को हटाकर उसके केन्द्र में पहुँचना आसान नहीं है। लोग इस तरह उन्हें घेरे पड़े हैं कि मानो वे उनके इतने अंतरंग हों कि वहाँ से इंच भर भी सरक नहीं सकते। फिर भी किसी तरह वहाँ का परिदृश्य देखते ही दोनों के चेहरे भौचक्क रह जाते हैं।

डामर पर एक स्कूटी लुढ़की पड़ी है जिससे एक तेल की धार निकालकर कुछ दूर तक जाती चली गयी है। उससे हट कर थोड़ी दूरी पर एक लड़का बैठा हुआ है। उसका सिर फूट गया है, जिससे एक रक्तधार बहती चेहरे पर चली आ रही है। फ़ुटपाथ पर दायें हाथ को सीधे यों लिये, मानो वह टूटा गया हो, वह बैठा अपने बाएँ हाथ के रूमाल से घाव को दबाये सिसक रहा है। लोग उसके इर्द-गिर्द आधे-अधूरे मन से फुसफुसा रहे हैं, मगर कोई भी उसे वहाँ से अस्पताल ले चलने का उद्यम करता दिखायी नहीं पड़ रहा है।

तभी पुलिस की जीप का सायरन सुनकर भीड़ बिखरने लगती है। वर्दीधारियों के वहाँ आते ही उन्हें यह जानते देर नहीं लगती कि फ़ुटपाथ पर

बैठे लड़के से ज़्यादा चोट उसके साथ की लड़की को लगी है, जो उसके पीछे बैठी थी और उसका अचेत शरीर उसके पीछे एक ओर पड़ा है। रक्तरंजित चेहरा जिसने हलकी गुलाबी टीशर्ट को भी खूनम-खून कर दिया है। उसकी साँसों में एक चिन्ताजनक तेज़ी है और ऐसा लग रहा है कि उसके प्राणों को बचाने के लिए अगर शीघ्र अस्पताल न ले जाया गया तो निश्चित ही स्थिति हाथ से निकल जाएगी।

पुलिसवाले स्थिति की गम्भीरता को भाँप जाते हैं। वे अपने कागज़-पत्तर निकालते हैं, वायरलेस पर कुछ सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं और फिर भीड़ से वहाँ से छँटने को कहते हैं।"कोई आप दोनों के साथ है? अकेले हैं?" वे लड़के से पूछते हैं।

नकारात्मक जवाब मिलने पर बगल से गुज़रते एक ऑटो को हाथ से इशारा करते हैं और निर्देशात्मक स्वर में कहते हैं, "ट्रॉमा लेकर चलो! तुरन्त!”

माहौल में व्याप्त दिखती संवेदना फिर विरल होने लगती है। लोग बिखरने लगते हैं, उनकी संघनित सहानुभूति भी बिखरने लगती है। औपचारिकता का कर्फ़्यू हट जाता है। समूह फिर युगलों में टूट-टूट कर कुछ ही देर में समाप्त हो जाता है। रह जाती है तो वह मुड़े हैण्डल और चकनाचूर हेडलाइट वाली स्कूटी, टूट कर एक ओर जा गिरा वह फाइबर का हेलमेट और सड़क पर बिखर कर अब काफी दूर तक जा चुका तेल।

सम्भवतः एक-दो मोटरसाइकिलें ऑटो के पीछे-पीछे ट्रॉमा-सेंटर की ओर चल देती हैं । चूंकि अभी दुनिया से भलाई का लोप नहीं हुआ है, इसलिए अपरिचित होने के बावजूद अच्छे सामरी होने का कर्तव्य कई लोग निभाया करते हैं। हैरत-भरी आँखों से इला पहले जाते ऑटो को देखती है फिर दूसरी ओर को बढ़ते पुलिस-वाहन को।

इला को लगता है कि यह ऑटो घायलों को लेकर अँधेरे में कहीं लुप्त होने को चल पड़ा है, निरुद्देश्य-निर्लक्ष्य। वह गन्तव्य तक नहीं पहुँचेगा, भटकते रहने

ही उसका गन्तव्य है। उसी ऐसी शामों, भीड़ों, दुर्घटनाओं को जंगल में देखने की आदत रही है, जिनकी परिणति नतीजा घुप्प अन्धकार के रहस्यमय एकाकीपन में होती है। नहीं मालूम चलता कि बाढ़ में बहकर दूर भटक कर चले गये गैंडा-शावक की क्या गति हुई, नहीं पता चलता कि तेंदुए के दाँतों में छटपटाते पहाड़ी गाँव के मेमने के अन्तिम क्षण कहाँ बीते, नहीं बोध होता कि सिंह-शावक की माँ के संग सम्भोग करते नर ने उसकी क्या गति बना डाली। जंगल में भीड़ केवल शाकाहारियों की लगती हैं, वे संग चरते हैं, संग घूमते हैं और सामूहिकता को ही प्रतिकार बताते एक-एक करके घटते चले जाते हैं।

जंगल में संख्याएँ घटती नहीं जान पड़तीं, जब तक उसका पाला इंसान से न पड़े। इंसान उन संख्याओं को छेड़ते हैं ताकि उन्हें गिन सकें। या शायद उन्हें गिनते हैं कि उन्हें छेड़ सकें। इसी छेड़ने-गिनने के चलते-चलाते उपक्रम में धीरे-धीरे जंगल का अन्तिम तेंदुआ सबसे आदिम आदमियों द्वारा लाठियों से मारा जाता है और जंगल पर इंसानी रिहाइश का कब्ज़ा हो जाता है।

लेकिन फिर जब इस आदमियत को जंगलों की कमी पड़ती है तो फिर इसमें एक बदलाव आता है। यह अपने ख़ूँख़ार पंजों से अपने ही तन को, अपने ही अवयवों को नोचने लगती है। आदमी से आदमी टकराने लगते हैं, एक-दूसरे को खाने लगते हैं, एक-दूसरे को मारने-गिराने लगते हैं। घायलों-मृतकों को देखने के लिए भीड़ जुटती है, वाइल्डलाइफ़-फ़ोटोग्राफ़ी की तर्ज़ पर खच-खच चित्र खिंचते हैं, वाह-वाह होती है और फिर किसी को यह परवाह नहीं होती कि फ़ोटो का वह चेहरा आज-कल कहाँ है और उसकी क्या गति हो चुकी है।

"जिसने मारा, उसका क्या हुआ? ट्रेस किया?" उसने जुगल को किसी से पूछते सुना। उत्तर में उसकी दिलचस्पी नहीं थी। हिट-एण्ड-रन का केस है, मार कर भागने वाली चौपहिया पकड़ी जाए या हाथ न आये, उससे भला हासिल क्या होगा? वह तो क़ानून की रस्म-अदायगी-भर है, जिसे औने-पौने ढंग से सिस्टम करता चला आया है।

इला को सब कुछ रस्म-अदायगी भर मालूम देता है। लोगों के लिए जन्म लेना एक रस्म है, ज़िन्दगी जीना एक रस्म है, गिरकर चोट खाना एक रस्म है, मरना...मरना भी तो एक रस्म ... रस्म है।" गंजले! सुन!" वह मुड़कर लोगों से बात करते जुगल के कन्धे को झिंझोड़ते हुए कहती है।

"क्या हुआ अब? अचानक क्यों एक्साइटेड हो रही है इतनी? व्हॉट? क्या मतलब यार? हम क्यों चलें? बाई-स्टैंडर से मेनस्ट्रीम में घुसने का तुझे बड़ा शौक चर्राता है यार ... रुकियो यहीं! आता हूँ!"

जुगल की टकराहट महज़ एक दिखावा है। इला के प्रति उसमें स्नेह का एक ऐसा प्रतिदर्श है कि वह पहले उसकी बात का प्रतिवाद करता है, फिर उसी काम को इस तरह करने पूरे मन से चल पड़ता है। दस-एक मिनट में वह अपनी बाइक लेकर उसके सामने था।"बैठ जंगली!"

"गये तो वे ट्रॉमा ही होंगे न? ऑटोवाले ने कोई गोटी तो नहीं खेली होगी?" रास्ते में उसके कानों में इला का संशय-स्वर पड़ रहा है।

"लेट्स सी। जंगल में एनडेंजर्ड स्पीशीज़ तलाशने से आसान है इंसान को ढूँढ निकालना शहर में..."

लगभग बीस मिनट में वे मेडिकल कॉलेज के ट्रॉमा-सेंटर के सामने उन दोनों घायलों को तलाश कर रहे थे। वहाँ इंसानों की कहीं ज़्यादा भीड़ है, वहाँ इतने बीमार और घायल विषय जमा हैं कि एकाएक अपने इंसान और विषय को ढूँढ़ पाना सरल नहीं होता। अपरिचित चेहरे, अपरिचित समस्याएँ। वे वहाँ के सफ़ेद यूनिफ़ॉर्मवालों में से एक से सवाल करते हैं। फिर दूसरे से। फिर तीसरे से। इसी सिलसिले में वे अन्ततः जान जाते हैं कि उन दोनों को इमरजेंसी में रखा गया है जहाँ सर्जरी-विभाग के डॉक्टर उनके उपचार में रत हैं।

सफ़ेद बिस्तरों में से एक पर वही लड़का लेटा हुआ है, हाथ से उसके नर्स रक्त का नमूना लेने का प्रयास कर रही है।

"इनके साथ कौन है ... आकांक्षा के साथ?" तभी पीछे से एक स्वर कानों में पड़ता है। लड़के के समीप के बिस्तर पर पड़ी लड़की की तरफ़ इशारा करते एक जूनियर डॉक्टर कहते हैं। इला और जुगल को उस जिस्म को पहचानने में दिक्कत नहीं होती। वही रक्तस्नात चेहरा, वही लाल हो चुकी गुलाबी टी-शर्ट।

"डॉक्टर! सर हुआ क्या है इनको?"

"ओ, आप इनके संग हैं? इनका फ़ौरन ऑपरेशन करना पड़ेगा। सीने की पसलियाँ टूटी हैं और पेट में भी बड़ी चोट है। ख़ून की ज़रूरत पड़ेगी और पैसों की भी। आप के साथ कितने लोग हैं?"

"हम हैं सर, बस हम दोनों। बिलकुल अकेले।" जुगल जवाब देता है।

"तो फोन करके और लोगों को बुलाओ मेरे भाई! हट्टे-कट्टे हो, अपने जानने वाले के लिए ब्लड-डोनेट भी नहीं कर सकते?"

इला और जुगल की नज़रें बगल में लेटे आकांक्षा के साथ के लड़के से चार होती हैं। ऐसा लगता है कि वह उन्हें देख रहा है मगर कुछ बोल सकने की ताक़त उसमें अब नहीं बची है। बमुश्किल वह अपना आइकार्ड उनकी ओर हवा में उठाता है। इला उसपर लिखा पता और फोन-नम्बर पढ़कर उसके घरवालों को सूचना देती है। फिर वह बाहर निकलते हुए एक नर्स से पूछती है, "सिस्टर, ब्लडबैंक के लिए कहाँ से जाएँ?"

नर्स बातचीत में इतने मशगूल है कि तीसरी बार में मात्र हाथ उठाकर उसे घुमाते हुए इशारा करती है। फिर वह जुगल से आँखों को किसी बोधभाव में झपकाते हुए पूछती है।" गंजले चलें? दुनिया के एक मर्द और एक औरत मौत से लड़ रहे हैं।"

"नेकी और पूछ-पूछ। चल।" हाथ से आगे बढ़ने का इशारा करते हुए जुगल की चाल तेज़ हो जाती है।

* * *